Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:13 Issue:1 October 2017 UGC Approval Number 63012

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि की भूमिका

Pooja
Indra Gandhi University, Meerpur, Rewari

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

सारांश

ग्रामीण क्षेत्राकों में कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन है। कभी महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था कि भारत की वास्तविक प्रगति का तात्पर्य शहरी औद्योगिक विकास से नहीं बल्कि मुख्य रूप से गाँवों वेफ विकास से है। ग्रामीण विकास ही राष्ट्रीय विकास का केंद्र है। यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है। ऐसा क्यों है हम अपने चारों ओर बड़े उद्योगों तथा सूचना-प्रौद्योगिकी वेंफद्रों से लैस शहरों को प्रगति करते हुए देखते हैं पिफर भी ग्रामीण विकास को ही इतना अधिक महत्व क्यों दिया जाता है? इसका उत्तर है कि आज भी भारत की दो-तिहाई जनसंख्या कृषि पर आश्रित है जिसकी उत्पादकता अभी भी इतनी ही है कि उससे सबका निर्वाह भी नहीं हो पाता। इसी कारण से देश की एक-चैथाई जनता अभी भी घोर निर्धनता में रहती है। यदि हम भारत की वास्तविक उन्नति चाहते हैं तो हमें विकसित ग्रामीण भारत का निर्माण करना होगा। ग्रामीण विकास से क्या तात्पर्य है इस शोध में हम कृषि का आर्थिक विकास की प्रक्रिया में योगदानए अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्वए औद्योगिक क्षेत्र काए कृषि का आर्थिक विकास की प्रक्रिया में योगदानए ग्रामीण विकास में कृषि प्रंसस्करण आधारित उद्योग एवं कृषि प्रसंस्करण आधारित औद्योगीकरण आर्थिक विकास के मध्यधनात्मक सम्बन्ध नहीं है आदि के बारे में चर्चा की है

1. प्रस्तावना

कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि प्रसंस्करण उद्योग मानव उद्यम के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों कृषि-सम्वर्गीय क्षेत्र एवं उद्योग क्षेत्र के मध्य सेतु का कार्य करते हैं। कृड्ढि और उद्योग दोनों ही सामान्यतः अपनी भिन्न विषेड्ढताओं एवं आर्थिक विकास में अपनी भिन्न-भिन्न भूमिका के आधार पर 2 अलग-अलग क्षेत्रों के रूप में जाने जाते हैं। कृड्ढि का विकास के प्राथमिक स्तर का सूचकांक माना जाता है जबकि औद्योगीकरण विकास पथ पर किसी राष्ट्र की प्रगति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संकेत माना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था हो या भारतीय जनजीवन सभी

कृषि के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटते नजर आते हैं। वर्ष 1958 मं कृषि के महत्व को रेखांकित करते हुए कृषि प्रषासनिक समिति ने कहा था "कृड्ढि ही सभी उद्योगों की जननी है और मनुष्य को जीवन प्रदान करने वाली है। कृषि और उद्योगों की पूरकता के सम्बन्ध में नेहरूजी ने भी लिखा था हमें यह बात समझनी होगी कि कृषि की उन्नति एवं प्रगति के बिना औद्योगिक प्रगति प्राप्त नहीं की जा सकती। वस्तुस्थिति तो यह है कि इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।'

विकासशील राष्ट्रों में कृषि आजीविका का एक मुख्य साधन है। विकासशील राष्ट्रों की एक महत्वपूर्ण विषेषता उनकी अर्थव्यवस्था की कृषि पर निर्भरता है। किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास हेतु कृषि का विकास न केवल आवष्यक है अपितु अपरिहार्य भी है।

औद्योगीकरण समुचित आर्थिक विकास की प्राप्ति का होता है। विकासशील राष्ट्रों में औद्योगीकरण कृषि पर निर्भर है। कृषि न केवल उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने का आधार है अपितु उद्योगजनित उत्पादन के लिए एक बड़ा बाजार प्रदान करती है। भारत भी एक विकासशील राष्ट्र है और यहां कृषकों की एक वृहद जनसंख्या की निर्धनता की स्थिति इतनी दयनीय है कि वह मूलभूत कृषि की आवष्यकताओं यथा उन्नत बीज, खाद व कीटनाषक भी क्रय नहीं कर पाते है तब अधिक खर्चीले उत्पादों यथा फसल कटाई मशीन, टैक्टर व बुर्वाइ मशीन खरीदने की बात ही क्या करना। भारत में अधिसंख्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में उत्पादन या तो व्यक्तिगत रहा है या भागीदारिता के आधार पर साथ ही यह आधुनिक और बेहतर उत्पादन तकनीकों के प्रयोग से परे है।

पिछले 50-60 वर्षों में कृड्ढि. पषुपालन, दुग्ध, फल, सब्जियां और विभिन्न प्रकार की रेषेदार फसलों के उत्पादन में भारत ने आष्चर्यजनक प्रगति की है और सब्जी तथा खाद्यान्नों में विषेड्ढकर गेंहू व धान उत्पादन में तो यह विष्व में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में भी भारतीय कृड्ढि की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आज भारत विभिन्न देषों को प्रचुर मात्रा में मसाले, आयल, बीज, चाय, तम्बाकू, मेवे आदि का निर्यात करता है जिसका आधार कृड्ढि ही है। हम कृड्ढि से बनी वस्तुओं के भी बडे निर्यातक हैं। अच्छे स्तर एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की वजह से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि अच्छी बनी हुई है। निर्यात से हमें विदेषी मुद्रा भी मिलती है जिससे हमारी अर्थव्यवस्था सुद्रण होती है

2. अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व

अब हमें कुछ बातों का ध्यान रखना होगा सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि कृषि के एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान के बारे में अब तक जो कुछ हमने

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:13 Issue:1 October 2017 UGC Approval Number 63012

पड़ा S वह मुख्य रूप से इस मान्यता के साथ था कि अर्थव्यवस्था के दूसरे देशों के साथ किसी प्रकार के आर्थिक सम्बन्ध नहीं है। यदि ऐसे सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं तो कृषि का अन्य क्षेत्रों के विकास में योगदान का महत्व कम हो जाएगा। गैर कृषि क्षेत्र अपने विकास के लिए कई प्रकार की बाहरी सहायता पर निर्भर कर सकते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि कृषि के अन्य क्षेत्र के विकास में योगदान के बारे में जो कुछ ऊपर लिखा गया है, वह केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रारम्भिक विकास की स्थिति में ही लागू होता है। वास्तविकता यह है कि जैसे-जैसे एक अर्थव्यवस्था का विकास होता जाता है, कृषि की इस विकास में भूमिका बदलती जाती है, और उस समय जब अर्थव्यवस्था का काफी विकास हो चुका है तथा गौण और तृतीय क्षेत्र काफी विस्तृत हो चुके हैं, तो इन क्षेत्रों की अपने विकास के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भरता बहुत कम हो जाती है। अब गैर-कृषि क्षेत्र उत्पादन के लिए अपने ऊपर ही निर्भर हो जाते हैं जैसे कि वह अब अपने लाभों को ही पूंजी के रूप में निवेष करते हैं तथा कृषि उत्पादों को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करने के साथ-साथ खनिज पदार्थो का भी प्रयोग करने लग जाते हैं। इसके साथ ही अब ये क्षेत्र कृषि क्षेत्र को कई प्रकार के उत्पादन के साधन जैसे कि उर्वरक, कीटनाषक दवाईयां आदि उपलब्ध करवाने लग जाते हैं। इसके अतिरिक्त गैर-कृषि क्षेत्र ग्रामीण लोगों को उपभोग की वस्तुओं की आपूर्ति करवाने लग जाते हैं। विकास कर रहे कृषि क्षेत्र तथा गैर-कृषि क्षेत्र इस प्रकार, एक समय के पष्चात एक दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। इसका यह भी अर्थ निकलता है कि जैसे-जैसे कृषि क्षेत्र का एकतरफा योगदान कम होता जाता है तथा दूसरे क्षेत्रों का तुलनात्मक रूप से पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान बढ़ता जाता है, कृषि का राष्ट्रीय आय में हिस्सा भी कम होता चला जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कृषि क्षेत्र जो कि अर्थव्यवस्था के प्रारम्भिक विकास में अन्य क्षेत्रों के विकास में बहुत सहायक होता है ऐसा करने में अंततः अपना पुराना महत्व खो बैठता है। परन्तु यह कहना ठीक नहीं होगा कि किसी समय अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि क्षेत्रों को खाद्यान्न उपलब्ध करवाना तथा कच्चे माल की आपूर्ति करवाने की जिम्मेदारी तो हर समय कृषि क्षेत्र पर ही रहेगी। परिवर्तन केवल यह होगा कि अर्थव्यवस्था के विकास के प्रारम्भ की बजाय अब यह क्षेत्र ग्रामीण आर्थिक विकास में औद्योगिक तथा अन्य क्षेत्रों का एक सहयोगी बन जाता है।

3. कृषि का आर्थिक विकास की प्रक्रिया में योगदान

किसी भी अर्थव्यवस्था को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है। ये भाग हैं 1-प्राथमिक क्षेत्र

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:13 Issue:1 October 2017 UGC Approval Number 63012

2-गौण क्षेत्र 3-तृतीय क्षेत्र। कृषि प्राथमिक क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि तथा खनिज पदार्थों के निकालने क कार्यक्रम आते हैं। गौण क्षेत्र में हर प्रकार की औद्योगिक गतिविधि सम्मिलित है। तृतीय क्षेत्र, सेवा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है; वे सब प्रक्रियाएं इस क्षेत्र का भाग हैं जो उत्पादित वस्तुओं के वितरण, परिवहन, नागरिक प्रषासन, बीमा, बैंक-प्रणाल आदि से सम्भंदित है

यदि हम विकसित देषों के इतिहास का अध्ययन करें तो हमें उन सब के विकास में कुछ समानता दिखाई देगी। वह यह है कि इनके गौण क्षेत्र तथा कुछ सीमा तक तृतीय क्षेत्र विकास से पहले, कृषि क्षेत्र का विकास हुआ है। उदाहरणतया इंग्लैंड का प्रारम्भिक औद्योगिक विकास, इसकी कृषि क विकास के कारण ही सम्भव हुआ था। पष्चिम यूरोप के बहुत से विकसित देषों जैसे कि फ्रा ंस, बेल्जियम, जर्मनी तथा स्वीडन के विकास की प्रक्रिया का एक सामान्य कारण इनकी कृषि की बढ़ती हुई उत्पादकता थी। एषिया के सबसे विकसित देष अर्थात जापान की आर्थिक समृद्धि को इसके आधुनिक औद्योगीकरण के पूर्व हुए, कृषि के विकास की ही देन माना जाता है। जापान में पहले महायुद्ध के पूर्व के समय में, कृषि में प्रति एकड़ तथा प्रति व्यक्ति उत्पादकता में बहुत वृद्धि हुइ थी।

वास्तविकता यह है कि लगभग सब विकसित एवं विकासशील देषों में कृषि के प्रारम्भिक विकास के कारण ही दूसरे क्षेत्रों का विकास सम्भव हो सका है। यह कथन उन देषों के लिए तो बिलकुल ही ठीक उतरता है जिन्होंने अपने विकास के लिए केवल अन्तरिक साधनों का ही प्रयोग किया है। कृषि का विकास समस्त अर्थ व्यवस्था में कई प्रकार से सहायक होता है। कुजनेट्स के अनुसार कृषि के एक अर्थव्यवस्था के विकास में निम्नलिखित प्रकार के योगदान है -

3.1 साधनों का योगदान

कृषि का विकास हो जाने के फलस् साधनों का योगदान वरूप, उत्पादन के कुछ साधनों को कृषि क्षेत्र से अन्य क्षेत्रों में स्थानान्तरित करने की सम्भावना पैदा हो जाती है। इसे हम विकास के लिए कृषि का साधन सम्बन्धी योगदान कहते हैं।

- पूंजी की आपूति
- श्रम की आपूर्ति

3.1.1 उत्पाद सम्बन्धी योगदान

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विका उत्पाद सम्बन्धी योगदान स में कृषि के उत्पाद सम्बन्धी योगदान के दो रूप हैं जो कि इस प्रकार है -

- गैर कृषि क्षेत्रों में लगे हुए श्रमिकों के लिए खाद्यान्न
- उद्योगों के लिए कच्चा माल

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:13 Issue:1 October 2017 UGC Approval Number 63012

3.1.2 मण्डी सम्बन्धी योगदान

कृषि विकास से वस्तुओं के एक मण्डी सम्बन्धी योगदान क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवाह की मात्रा में कई कारणों से काफी वृद्धि होगी। इस कारण अर्थव्यवस्था में कई प्रकार का विकास होगा। इस प्रकार के विकास को हम कृषि का ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए मण्डी सम्बन्धी योगदान कहेंगे। इसके कई पहलू हैं।

- कृषि क्षेत्र का गैर-कृषि क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं के लिए एक विस्तृत मण्डी के रूप में काम करन
- कृषि उत्पादों का अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों में ले जाया जान
- अन्तराष्ट्रीय व्यापार में उन्नति

4. कृषि का औद्योगिक क्षेत्र का, आर्थिक विकास की प्रक्रिया में योगदान

हमने पहले अध्याय में इस बात की ओर ध्यान आकड्ढित किया था कि समय के व्यतीत होने के साथ कृषि क्षेत्र अपने ही विकास के लिए औद्योगिक क्षेत्र पर निर्भर हो जाता है। औद्योगिक क्षेत्र कृषि क्षेत्र के विकास में निम्नलिखित तरीकों से सहायता करता है -

- **औद्योगिक क्षेत्र का विकास कृषि उत्पादों की मांग में वृद्धि करता है**

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वृद्धि करता है - आरम्भ में कृषि क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र के विकास में सहायता करता है परन्तु जब औद्योगिक क्षेत्र विकसित हो जाता है

- **कृषि उत्पादन के लिए नवीनतम साधनों की आपूर्ति**

यह कृषि उत्पादन के लिए नवीनतम साधनों की आपूर्ति - औद्योगिक क्षेत्र की कृषि क्षेत्र को सबसे महत्वपूर्ण देन है। यह देखा गया है कि औद्योगिक क्षेत्र ने कृषि क्षेत्र को एक नया तकनीकी आधार दिया है। विकसित देशों में कृषि बहुत की पूंजीकृत है

- **भूमि पर जनसंख्या के दबाव में कमी**

इसमें तो कोई भूमि पर जनसंख्या के दबाव में कमी सन्देह नहीं कि औद्योगिक क्षेत्र के प्रारम्भिक विकास में श्रम की आपूर्ति, कृषि क्षेत्र से हुई थी। परन्तु भावी अवस्था लाने के लिए तैयारियां की जाती है जैसे आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग, चिकित्सा, अनुसन्धान में प्रगति, सामाजिक उपरिव्यय पूंजी का निर्माण आदि।

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:13 Issue:1 October 2017 UGC Approval Number 63012

5. ग्रामीण विकास में कृषि प्रंसस्करण आधारित उद्योग

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ग्रामीण विकास प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। भारत में अभी ग्रामीण विकास की दर धीमी है, जिसका प्रमुख कारण आधारभूत संसाधनों का पूर्णतः विकसित न हो पाना है। वर्तमान औद्योगीकरण के युग में ग्रामीण विकास में कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों का अपना एक विषिष्ट स्थान है। फसलाधारित वे उद्योग जिनमें आगत के रूप में कृषि जिन्सों का प्रयोग होता है तथा प्राथमिक तकनीकी पर आधारित मिलों उद्योगों में उनकी प्रक्रिया अथवा रूपान्तरण होता है, ताकि स्वच्छ जिन्स प्राप्त हो सके, उन्हें कृषि आधारित उद्योग कह सकते हैं। धान, दाल, तिलहन पर आधारित उद्योग ऐसे उद्योगों के उदाहरण हैं। कृषि जिन्स ही इन उद्योगों के आगत व निर्गत है। इन उद्योगों में कम पूंजी की आवष्यकता होती है, इनका संचालन कुषलतापूर्वक किया जा सकता है। कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों के साथ ग्रामीण विकास का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है देष में अधिकांष जनसंख्या गांवों में निवास करती है और वह अधिकतर कृषि पर ही आश्रित है साथ ही गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने को बाध्य है; ऐसे में कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों की स्थापना से अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। केन्द्र सरकार ने परम्परागत कृषि संरचना में परिवर्तन करने के उद्देष्य से कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना पर विषेड्ढ बल दिया है।

6. कृषि प्रसंस्करण आधारित औद्योगीकरण आर्थिक विकास के मध्यधनात्मक सम्बन्ध नहीं है

सामान्य रूप से यह अध्ययन में पाया गया कि बांदा जनपद की कुल जनसंख्या की लगभग 70 प्रतिषत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जनपदीय अर्थ व्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव अधिक पाया गया है अर्थात कृषि क्षेत्र में आय जनन की क्षमता अत्यन्त क्षीण है। जनपद मे कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों में आय एवं रोजगार जनन की स्थिति अच्छी पाई गई है। कृषि प्रसंस्करण आधारित औद्योगीकरण से कृषि क्षेत्र की अतिरिक्त जनसंख्या को कृषि प्रसंस्करण आधारित उद्योगों में समायोजित करके लोगों की आय एवं बचत क्षमता में वृद्धि की जा सकती है (जनपदीय अर्थ व्यवस्था को गरीबी एवं बेरोजगारी के दुष्चक्र से छुटाने एवं आर्थिक विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए ग्रामीण औद्योगीकरण करना आवष्यक एवं तार्किक रूप से सही पाया गया अतः यह संकल्पना कि कृषि प्रसंस्करण आधारित औद्योगीकरण एवं आर्थिक विकास के मध्य धनात्मक सम्बन्ध नहीं हैं असत्य पाया गया है, इसलिए पहली संकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

7. निष्कर्ष

ऊपर लिखित कुछ अनुच्छेदों से यह स्पष्ट है कि निष्कड्ढ - भारत में कृषि तथा औद्योगिक दोनों क्षेत्रों ने एक दूसरे के विकास में सहायता की है। हाल ही में किए गए कुछ और अध्ययन भी भारत में कृषि और औद्योगिक क्षेत्र की पारस्परिक सहायता की पुष्टि करते हैं। वास्तव में दोनों क्षेत्रों की पारस्परिक सहायता का यह दृष्य हर विकासशील देष में दिखाई देता है। जौनसन का कहना है कि एक क्षेत्र की गतिहीनता का अर्थ होगा दूसरे क्षेत्र के विकास में रूकावट और इसका परिणाम होगा पूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास के पथ में एक बहुत बड़ी अड़चन।

वर्तमान समय में विष्व की अर्थव्यवस्था ऐसे स्तर पर पहुंच गई है जहां प्रत्येक राष्ट्र आर्थिक प्रगति की ओर अग्रसर है। वर्तमान समय में औद्योगिक को सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था अपने प्रकृति-प्रदत्त कुछ प्रचुर साधनों के कुषलतम विदोहन के लिए प्रतीक्षारत है अर्थात प्रकृति प्रदत्त साधनों का आर्थि क विकास एवं मानव कल्याण के लिए अधिकतम उपयोग कैसे किया जाय, यह भारत में औद्योगीकरण के लिए एक चुनौती बन गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. डा0 अर्जुन सोलंकी कृड्ढि आधारित प्रमुख उद्योग: समस्या एवं सुझाव", कुरूक्षेत्र, मई-2014, पेज नं0-03।
2. डा0 कल्पना द्विवेदी "भारतीय अर्थव्यवस्था में कृड्ढि आधारित उद्योगों की भूमिका" कुरूक्षेत्र, मई-2014, पेज नं0-08।
3. इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्सए इंडियन सोसाइटी कृषि अर्थशास्त्र।

Author’s Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds

trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

Pooja

*****